بسم الله الرحمن الرحيم

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 27
Issue - 06

राह-ए-ईमान

जून
2025 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत) 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 30-05-2025) 8
7. मसीह मौऊद अलै के उपदेश हैदराबाद से आकर नई बैअत करने वालों को 12
8. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का भाषण 30 दिसम्बर 1904 ई 25
9. सामान्य ज्ञान 30

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

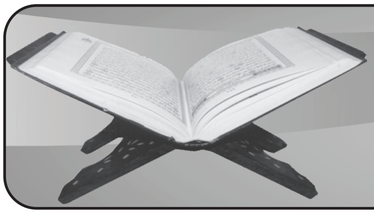

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:- 146- तू उन से कह दे कि जो कुछ मेरी ओर उतारा गया है मैं तो उस में उस व्यक्ति के लिए जो किसी वस्तु के खाने का इच्छुक हो कोई चीज़ हराम नहीं पाता सिवाय मुर्दार या बहते हुए रक्त या सूअर के माँस के। इसलिए कि (सूअर का माँस) अपवित्र है अर्थात् उस वस्तु को जिस पर अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया गया हो, किन्तु जो व्यक्ति (उस के खाने के लिए) बे-बस हो जाए, परन्तु वह शरीअत का विरोधी न हो तथा सीमा का उल्लंघन करने वाला भी न हो तो (वह याद रखे कि) निस्सन्देह तेरा रब्ब क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।

147-और जो लोग यहूदी हैं हम ने उन के लिए नाख़ून वाले सब जानवर हराम ठहरा दिए थे तथा गौ और भेड़-बकरी में से दोनों की चर्बी भी हराम ठहरा दी थी सिवाय उस चर्बी के जो उन की पीठों या अंतड़ियों पर हो या जो हड्डी से लगी हुई हो। हम ने यह उन्हें उन की नाफ़रमानी का दण्ड दिया था और निस्सन्देह हम सच्चे हैं। (सूरह अल् अनाम- 146-147)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर कोई सुने कि कोई आदमी अपनी गुमशुदा चीज़ की घोषणा मस्जिद में कर रहा है तो बतौर शाप के कहे कि अल्लाह तआला तुम्हारी यह चीज़ तुम्हें वापस न दिलाए क्योंकि मस्जिदें इस उद्देश्य के लिए नहीं बनाई गईं हैं। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

हज़रत अमरो बिन शुऐब ने अपने पिता और वह अपने पिता से रिवायत करते हुए बताते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना किया है कि मस्जिद में मुशायरा के रंग में शेर पढ़े जाएं या उसमें बैठकर खरीदने और बेचने की बात की जाए या शुक्रवार के दिन नमाज़ से पहले लोग टोली बनाकर बैठे बातें करें। (अबु दाऊद किताबुस्सलात मिश्कात पृष्ठ 70)

हज़रत जाबिर वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया कि कोई व्यक्ति प्याज़ या लहसुन खाकर मस्जिद में आए। आपने फरमाया जो व्यक्ति यह बदबूदार सब्ज़ी खाए वह हमारी मस्जिद के पास न आया करे क्योंकि फरिश्तों को भी इस बात से तकलीफ होती है जिससे लोगों को तकलीफ होती है। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
The Promised Messiah

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

करामात-ए-औलिया

एक साहिब जिनके ख़ानदान में पीरी-मुरीदी का काम लम्बे समय से चला आता है और हज़ारों उनके मुरीद हैं और वह स्वयं भी पीर थे मगर अब उन कामों को छोड़कर इस ख़ुदाई सिलसिले में शामिल हैं। उन्होंने हज़रत के समक्ष बयान किया कि पीरी के दिनों में हम लोगों की अधिकतर झूठी करामतें मशहूर थीं और बहुत से लोग हमारे मुरीद थे और श्रृद्धा रखते थे। मैंने एक बार अपने भाई से कहा और दिल में कई बार यह बात गुज़री कि हमारे पिताजी की जो करामतें मशहूर हैं वे भी इसी तरह की होंगी जिस तरह की हमारी हैं। फिर हमने सोचा कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी और दूसरे बुज़ुर्गों का भी यही हाल होगा। अत: मैं इसी ख़याल में बढ़ते-बढ़ते निकट था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर भी बद्‌गुमानी कर बैठता और ख़ुदा की पनाह, कि शायद ख़ुदा के वजूद का भी इन्कार कर बैठता कि सौभाग्य से मुझे आपका दर्शन नसीब हो गया और हक़ मिल गया। इस पर हज़रत अक़दस ने फ़रमाया:

''नि:सन्देह इन गद्दीनशीनों और इस प्रकार के पीरों के ईमान ख़तरे में हैं। लेकिन इस प्रकार की झूठी करामतों के दिखलाने वाले और झूठी करामतों के मशहूर होने से यह नतीजा नहीं निकालना चाहिए कि सब झूठे ही हैं और औलिया अल्लाह एवं बुज़र्गाने दीन का सारा सिलसिला झूठ और मक्कारी पर आधारित था। बल्कि इन झूठे वलियों का वजूद इस बात का प्रमाण है कि दुनिया में सच्चे वली भी हैं। क्योंकि जब तक कोई सच्ची बात न हो तब तक झूठी बात नहीं बनाई जाती। उदाहरणत: अगर दुनिया में सच्चा और असली सोना न होता तो कीमियागर कभी झूठा सोना न बनाता। अगर सच्चे हीरे और मोती ख़ानों से न निकलते तो झूठे हीरे और मोती बनाने का किसी को विचार न पैदा होता। इन झूठों का होना स्वयं इस बात का प्रमाण है कि सच्चे भी अवश्य मौजूद हैं।

आदाब-ए-दुआ

दुआ के बारे में चर्चा थी, फ़रमाया: दुआ के लिए दर्द भरे शब्दों का चयन करना चाहिए। यह ठीक नहीं कि आदमी मस्नून दुआओं के ऐसे पीछे पड़े कि उनको जंतर-मंतर की तरह पढ़ता रहे और वास्तविकता को न पहचाने। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों का अनुसरण आवश्यक है लेकिन दर्द भरे शब्दों का चयन भी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों का अनुसरण है। अपनी भाषा में जिसको तुम ख़ूब समझते हो दुआ करो ताकि दुआ में दर्द पैदा हो। अल्फ़ाज़ परस्त (रट्टू तोता) शर्मिन्दा होता है। हक़ीक़त परस्त (यथार्थ और वास्तविकता को अपनाने वाला) बनना चाहिए। मस्नून दुआओं को भी बरकत के लिए पढ़ना चाहिए, मगर यथार्थ और वास्तविकता को पहचानो। हाँ जो अरबी भाषा अच्छी तरह जानता हो वह अरबी में पढ़े।''

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

सरकार भली भांति जानती है कि ऐसी आस्थाएं तो इन्हीं लोगों की हैं तथा यही लोग हैं जो सैकड़ों वर्षों से कहते चले आए हैं कि इस्लाम को जिहाद से फैलाना चाहिए। और न केवल इतना ही बल्कि यह भी उनका कथन है कि जब उनका काल्पनिक महदी प्रकट होगा या किसी गुफा में से निकलेगा और उसी समय में उनका काल्पनिक ईसा भी आकाश से उतर कर काफिरों के क़त्ल के लिए तेज़ हथियार अपने साथ ही आकाश से लाएगा। तो दोनों मिलकर संसार के समस्त काफिरों को क़त्ल कर डालेंगे और जिस ने इस्लाम से इन्कार किया चाहे वह यहुदियों में से हो अथवा ईसाइयों में से वह तलवार से क़त्ल कर दिया जाएगा। ये उन लोगों की पक्की आस्थाएं हैं यदि सन्देह हो तो किसी मौलवी का अदालत में शपथ पूर्वक बयान लिया जाए ताकि अदालत पर स्पष्ट हो जाए कि क्या वास्तव में इन लोगों की यही आस्थाएं हैं। या हम ने वर्णन करने में ग़लती की है।

परन्तु हम सरकार को बुलन्द आवाज़ से सूचना देते हैं कि इस युग में युद्ध और जिहाद से इस्लाम को फैलाना हमारी आस्था नहीं है और न यह आस्था कि जिस सरकार की छत्र-छाया में रहे और उसकी सहायता की छाया में अमन और सुरक्षा का लाभ प्राप्त करें और उसकी शरण में रहकर दिल की प्रसन्नता के साथ प्रचार कर सकें उसी से विद्रोहियों के समान लड़ना आरंभ कर दें। क्या इस अंग्रेजी सरकार में हम अमन और कुशलतापूर्वक जीवन व्यतीत नहीं करते? क्या हम अपनी इच्छानुसार धर्म का प्रसार नहीं कर सकते? क्या हम धार्मिक आदेशों को पूर्ण करने से रोके गए हैं? हरगिज़ नहीं बल्कि सच और बिल्कुल सच यह बात है कि हम जिस कोशिश (प्रयास) और आज़ादी से इस्लामी उपदेश और नसीहतें बाज़ारों में, कूचों में, गलियों में, इस देश में कर सकते हैं और प्रत्येक क़ौम को सच्चाई पहुंचा सकते हैं ये समस्त सेवाएं पवित्र मक्का में भी पूर्ण नहीं कर सकते, कहाँ यह किसी अन्य स्थान पर। तो क्या इस नेमत का धन्यवाद करना हम पर अनिवार्य है या यह कि ग़दर और विद्रोह आरंभ कर दें।

फिर यद्यपि हम धर्म की दृष्टि से इस सरकार को बड़ी ग़लती पर समझते और एक लज्जाजनक आस्था में ग्रस्त देख रहे हैं फिर भी हमारे नज़दीक यह बात बड़े गुनाह (पाप) और व्यभिचार में सम्मिलित है कि ऐसे उपकारी के मुक़ाबले पर विद्रोह का विचार भी दिल में लाएं। हाँ निस्सन्देह हम धर्मानुसार इस क़ौम को स्पष्ट ग़लती पर और एक मानवीय बनावट में ग्रस्त देखते हैं। तो इस स्थिति में हम दुआ

और ध्यान से उसका सुधार चाहते हैं और ख़ुदा तआला से मांगते हैं कि इस क़ौम की आँखें खोले और इनके दिलों को प्रकाशमान करे तथा इन्हें ज्ञात हो कि इन्सान की उपासना करना बहुत बड़ा अन्याय है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क्या हैं केवल एक निराश्रय मनुष्य। यदि ख़ुदा तआला चाहे तो एक क्षण में ऐसे करोड़ों बल्कि उनसे हज़ारों गुना उत्तम पैदा कर दे, वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है जो चाहता है करता है और कर रहा है। मुठ्ठी भर मिट्टी को प्रकाशमान करना उसके नज़दीक कुछ वास्तविकता नहीं। जो व्यक्ति साफ दिल और पूर्ण प्रेम से उसकी ओर आएगा निस्सन्देह वह उसे अपने विशेष बन्दों में शामिल कर लेगा। मनुष्य सानिध्य (क़ुर्ब) की श्रेणियों में कहां तक पहुंच सकता है इसका कुछ अन्त भी है। हरगिज़ नहीं। हे मुर्दों के उपासको ख़ुदा मौजूद है यदि उसे ढूंढोगे पाओगे। यदि सच्चाई के अनुयायियों के साथ चलोगे तो अवश्य पहुंचोगे। यह नामर्दों और नपुंसकों का काम है कि मनुष्य होकर अपने जैसे मनुष्य की उपासना करना। यदि एक को गुणवान समझते हो तो कोशिश करो कि वैसे ही हो जाओ न यह कि उसकी उपासना करो। किन्तु वह इन्सान जिसने अपने अस्तित्व से, अपनी विशेषताओं से, अपने कार्यों से और अपनी रूहानी एवं पवित्र शक्तियों के शक्तिशाली दरिया से पूर्ण कमाल का नमूना ज्ञान, कर्म, सच्चाई और दृढ़ता की दृष्टि से दिखलाया और पूर्ण इन्सान (इन्सान-ए-कामिल) कहलाया ख़ुदा तआला की क़सम वह मसीह इब्ने मरयम नहीं है। मसीह तो केवल एक मामूली सा नबी था। हाँ वह भी करोड़ों सानिध्य प्राप्त (मुकर्रबों) में से एक था। परन्तु उस सामन्य गिरोह में से एक था और मामूली था इस से अधिक न था। अत: इस से देख लो कि इंजील में लिखा है कि वह यह्या नबी का मुरीद था और शिष्यों की तरह बपतस्मा पाया।

वह केवल एक क़ौम विशेष के लिए आया और अफ़सोस कि उसके अस्तित्व से संसार को कोई भी रूहानी लाभ न पहुंच सका। संसार में एक ऐसी नुबुव्वत का नमूना छोड़ गया जिसकी हानी उसके लाभ से अधिक सिद्ध हुई। उसके आने से आज़मायश और उपद्रव बढ़ गया और संसार के एक बड़े भाग ने तबाही का भाग ले लिया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह सच्चा नबी तथा ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त (लोगों) में से था। किन्तु वह इन्सान जो सर्वाधिक पूर्ण और कामिल इन्सान था तथा कामिल नबी था और कामिल (पूर्ण) बरकतों के साथ आया, जिस से रूहानी अवतरण और प्रलय में मुर्दों का जी उठने के कारण पहली क़यामत प्रकट हुई और उस के आने से एक मरा हुआ संसार जीवित हो गया। **वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातमुल-अंबिया इमामुल अस्फिया खतमुल मुर्सलीन फ़खरुन्नबिय्यीन जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।** हे प्यारे ख़ुदा! इस प्यारे नबी पर वह रहमत और दरूद भेज जो संसार के प्रारंभ से तूने किसी पर न भेजा हो। यदि यह महान नबी संसार में न आता तो फिर जितने छोटे-छोटे नबी आए जैसे कि यूनुस, अय्यूब, मसीह इब्ने मरयम, मलाकी यह्या और ज़करिया इत्यादि-इत्यादि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई भी प्रमाण नहीं था यद्यपि सब सानिध्य प्राप्त (मुक़र्रब), रूपवान और ख़ुदा तआला के प्रिय थे। यह उस नबी का उपकार है कि ये लोग भी संसार में सच्चे समझे गए। (शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 77-80)

सम्पादकीय

प्रकृति पुकार रही है – क्या हम सुन पा रहे हैं?

(विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष प्रस्तुति)

पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। यह दिन पृथ्वी के संरक्षण और पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। 1972 में स्वीडन के स्टॉकहोम शहर में हुए 'संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन' के बाद से, हर साल 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाने की परंपरा शुरू हुई। इस दिन का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना और यह समझाना है कि हमें अपने पर्यावरण के लिए क्या कदम उठाने चाहिए।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर क्या करें?

वृक्षारोपण: पेड़-पौधे हमारे पर्यावरण के लिए जीवनदायिनी होते हैं। इनसे शुद्ध वायु मिलती है और जलवायु में संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है। पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण अभियान चलाना एक अच्छा कदम हो सकता है।

प्लास्टिक का कम से कम उपयोग: प्लास्टिक का अधिक उपयोग पर्यावरण के लिए हानिकारक है। यह न केवल जल में समा जाता है, बल्कि इसे नष्ट होने में भी हजारों साल लगते हैं। प्लास्टिक के स्थान पर पुन: प्रयोग योग्य सामग्रियों का उपयोग करना चाहिए।

जल संरक्षण: जल का अत्यधिक उपयोग और प्रदूषण इस प्राकृतिक संसाधन को संकट में डाल रहे हैं। हमें जल का बचाव करने के लिए कदम उठाने चाहिए जैसे कि वर्षा जल संचयन, जल की बर्बादी को रोकना, और जल पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना।

ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग: ऊर्जा का अधिकतम उपयोग भी पर्यावरण पर बोझ डालता है। हमें बिजली बचाने के उपायों पर ध्यान देना चाहिए, जैसे कि ऊर्जा दक्ष उपकरणों का उपयोग और सूरज की रोशनी का अधिकतम उपयोग।

जागरूकता फैलाना: हमें अपने दोस्तों, परिवार और समुदाय के लोगों को पर्यावरण के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए। इस दिन स्कूलों, कॉलेजों और सार्वजनिक स्थानों पर पर्यावरण संबंधी शिक्षा देने के कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

इसी विषय पर हमारे एक मित्र अनसार अली ख़ान, वास्कोडिगामा ने एक लेख लिखा है **प्रकृति पुकार रही है – क्या हम सुन पा रहे हैं? के शीर्षक से।** लेख को पढ़ तो बहुत अच्छा लगा इसलिए सोचा आपके समक्ष प्रस्तुत करूँ। वह लिखते हैं :

"हर वर्ष 5 जून को हम "विश्व पर्यावरण दिवस" मनाते हैं। बड़े-बड़े भाषण होते हैं, पौधे लगाए जाते हैं, रैलियाँ निकलती हैं, और फिर सब कुछ सामान्य हो जाता है। लेकिन क्या कभी आपने धरती की उस कराह को सुना है, जो वह हर रोज़ सहती है ? क्या आपने महसूस किया है उस नदी का दर्द, जो अब सूख चुकी है, उस पेड़ का क्रंदन, जिसे कल ही काट दिया गया, उस पंछी की उदासी, जिसने अपना घोंसला खो दिया?

प्रकृति हमारी माँ जैसी है, जीवनदायिनी, पालनकर्त्री, और हमारी सबसे पुरानी साथी। उसने हमें हवा दी, जल दिया, अन्न दिया, और जीवन जीने का आधार दिया। लेकिन आज उसे ही हमने प्रदूषण, दोहन और लालच की बलि चढ़ा

दिया है। जब बचपन में हम खेतों में दौड़ते थे, नंगे पाँव मिट्टी में खेलते थे, आम के पेड़ों से फल तोड़ते थे, तब धरती मुस्कुराती थी। आज बच्चे मोबाइल की स्क्रीन पर पेड़ देखते हैं, और किताबों में नदी की परिभाषा पढ़ते हैं। क्या यही है हमारी उन्नति ? हमने प्रकृति से बहुत कुछ लिया, लेकिन लौटाया क्या ? हर साल जंगलों का हज़ारों एकड़ हिस्सा साफ़ कर दिया जाता है। नदियाँ औद्योगिक कचरे की कब्रगाह बन चुकी हैं। हवा इतनी ज़हरीली हो चुकी है कि साँस लेना भी ख़तरे से खाली नहीं। और फिर जब बाढ़ आती है, सूखा पड़ता है, भूकंप आता है, तो हम कहते हैं कि "प्रकृति का प्रकोप"! लेकिन ये प्रकोप नहीं, यह प्रकृति की पुकार है, उसका प्रतिशोध नहीं बल्कि उसकी वेदना है। हमें रुकना होगा। सोच बदलनी होगी।

मज़हब इस्लाम की नज़र में प्रकृति एक अमानत है। पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है- और आकाशों में और धरती में जो कुछ भी है, उसमें से सब उसने तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया । इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए निश्चित रूप से खुले-खुले चिह्न हैं ।

(सूरः अल-जासियः 14)

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर होता है कि इंसान को ज़मीन की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी दी गई है। नबी-ए-अकरम हज़रत मुहम्मद (स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया-

"धरती अल्लाह की है और उसके बंदे इसमें मुसाफ़िर हैं।" (मुस्नद अहमद) यानी हम इस धरती के मालिक नहीं, बल्कि ज़िम्मेदार मेहमान हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.अ.) ख़ुद भी पर्यावरण के रक्षक थे।

आप (स.अ.) पेड़ों को काटने से मना करते, जानवरों के साथ दया का बर्ताव करने की सीख देते, और पानी को फ़िज़ूल ख़र्ची से बचाने की सख़्त ताकीद करते। यहां तक कि आप (स.अ.) ने फ़रमाया-

"अगर किसी ने एक पेड़ लगाया या फ़सल बोई, जिससे इंसान, जानवर या परिंदे फ़ायदा उठाएँ, तो वह उसके लिए सदक़ा है।" (सहीह मुस्लिम)

पेड़ काटने से पहले एक बार अपने बच्चों की आँखों में झाँकिए कि क्या आप उसे भी धूप और धूल भरी दुनिया सौंपना चाहते हैं ? नदियों में कचरा फेंकने से पहले अपने ईमान से पूछिए कि क्या यह वही धरती है जिसे हमने साफ़ रखने की क़सम खाई थी ?

पर आशा अभी बाक़ी है। हर छोटा क़दम, हर छोटा प्रयास बदलाव ला सकता है। एक पौधा लगाना, प्लास्टिक का प्रयोग कम करना, जल संरक्षण करना कि ये छोटे-छोटे काम बड़ी क्रांति का हिस्सा बन सकते हैं। और सबसे ज़रूरी है अपने बच्चों को प्रकृति से प्रेम करना सिखाइए। क्योंकि जो प्रकृति से प्रेम करता है, वह जीवन से प्रेम करता है।

आज इस पर्यावरण दिवस पर हम सभी एक संकल्प लें, "हम प्रकृति की सेवा करेंगे, उसे चोट नहीं पहुँचाएँगे।

हम पेड़ लगाएंगे, जल बचाएँगे, और स्वच्छता अपनाएँगे। क्योंकि हमें एक सुंदर पृथ्वी नहीं सिर्फ अपने लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बचानी है।"

आइए, इस धरती का दर्द बाँटें और उसके आशीर्वाद के योग्य बनें। क्योंकि अगर हमने अब भी नहीं सुना, तो शायद कल वह पुकार एक चीख बन जाएगी।"

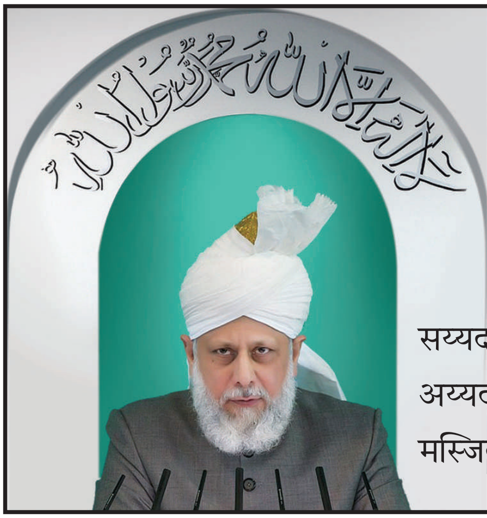

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 30.5.2025 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हमें चाहिए कि ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम करने के लिए हर क़ुरबानी के लिए तय्यार रहें

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने इन आयतों की तिलावत फरमाई :

وَاَقۡسَمُوۡا بِاللّٰہِ جَہۡدَ اَیۡمَانِہِمۡ لَئِنۡ اَمَرۡتَہُمۡ لَیَخۡرُجُنَّ ؕ قُلۡ لَّا تُقۡسِمُوۡا ۚ طَاعَۃٌ مَّعۡرُوۡفَۃٌ ؕ اِنَّ اللّٰہَ خَبِیۡرٌۢ
بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ۔ قُلۡ اَطِیۡعُوا اللّٰہَ وَاَطِیۡعُوا الرَّسُوۡلَ ۚ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنَّمَا عَلَیۡہِ مَا حُمِّلَ وَعَلَیۡکُمۡ مَّا حُمِّلۡتُمۡ ؕ
وَاِنۡ تُطِیۡعُوۡہُ تَہۡتَدُوۡا ؕ وَمَا عَلَی الرَّسُوۡلِ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِیۡنُ۔ وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ ۪ وَلَیُمَکِّنَنَّ لَہُمۡ دِیۡنَہُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَہُمۡ وَلَیُبَدِّلَنَّہُمۡ
مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِہِمۡ اَمۡنًا ؕ یَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ بِیۡ شَیۡئًا ؕ وَمَنۡ کَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ۔
وَاَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَاَطِیۡعُوا الرَّسُوۡلَ لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदिय्या जमाअत में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम हुए 117 वर्ष बीत चुके हैं। 1908 में यह निज़ाम क़ायम हुआ। अत: यह अल्लाह तआला का महान उपकार है अहमदिय्या जमाअत पर कि हम एक ऐसे निज़ाम का भाग हैं जिसकी पेशगोई अल्लाह तआला ने फ़रमाई कि मसीह व मेहदी के आगमन के बाद एक ऐसा दौर शुरू होगा जो इस्लाम के पुनरोत्थान का दौर है और फिर उसी निज़ाम में ख़िलाफ़त का दौर भी शुरू होगा जिसके बारे में आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट रूप में भविष्य वाणी की थी कि तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर वह उसको उठा लेगा और ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्व: (नबुव्वत के दौर की तरह ख़िलाफ़त) स्थापित होगी, फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेमत को भी उठा लेगा, फिर उसके विधान के अनुसार कष्टदायक राज्य क़ायम होगा, जब यह दौर पूरा होगा तो इससे भी बढ़ कर कष्ट एवं पीड़ा देने वाला राज्य स्थापित होगा, और यह फ़रमा कर आप स. चुप हो गए।

अत: यह पेशगोई थी आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिसके अनुसार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के बाद एक नया दौर इस्लाम के पुनरोत्थान का आरम्भ हुआ और आप अलै. के निधन के बाद ख़िलाफ़त का दौर भी शुरू हुआ।

हुज़ूरे अनवर ने तिलावत फर्मूद: आयतों का अनुवाद पेश करने के बाद फ़रमाया कि इन आयतों से पूर्णत: स्पष्ट है कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से वादा किया है कि तुम में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम होगा। ख़ुल्फ़ाए राशिदीन का ज़माना तीस साल तक रहा, अब तीस साल तक के लिए तो यह वादा नहीं था बल्कि एक व्यापक वादा था और इसकी व्याख्या आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमा दी। अतएव इस बात को हम अहमदियों को याद रखना चाहिए कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलै. को मानकर अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करने का एक संकल्प किया है, परन्तु इसके लिए भी शर्तें हैं। अत: इन शर्तों को पूरा करना भी हमारे लिए अनिवार्य है।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- सो ऐ मित्रो! जबकि कदीम (अनादि काल) से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो कुद्रतें (ज़ोर) दिखलाता है ता मुख़ालिफों की दो झूठी ख़ुशियों का विनाश करके दिखलावे........मैं ख़ुदा की तरफ़ से क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम (साकार) क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे (प्रतिरूप) होंगे। सो तुम ख़ुदा की क़ुदरते सानी (दूसरी क़ुदरत) के इंतज़ार में इकट्ठे होकर दुआ करते रहो और चाहिए कि हर एक सालिहीन (दिव्य पुरुष) की जमाअत हर एक देश में इकट्ठे होकर दुआओं में लगे रहें ता दूसरी क़ुदरत आसमान से नाज़िल हो। उस समय जब आप अलै. ने यह इरशाद फ़रमाया था, हिन्दुस्तान में जमाअत थी और थोड़े से लोग बहार होंगे, परन्तु यह पेशगोई भी आपने एक रंग में फ़रमा दी कि हर देश में यह दुआ करते रहें, मानो कि भविष्य में ऐसा ज़माना आएगा कि जब दुनिया में हर जगह अहमदिय्या जमाअत फैल जाएगी, और आज हम वह ज़माना देख रहे हैं कि दुनिया में जमाअते अहमदिय्या फैली हुई है, और हर जगह ख़िलाफ़त से वफ़ा और प्यार और मुहब्बत का सम्बन्ध हमें नज़र आता है और भविष्य में सदेव इसके अनुसार अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लों से हमें प्रदान करता चला जाएगा क्यूंकि यह अल्लाह तआला का वादा है। अत: हमें चाहिए कि ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम करने के लिए हर क़ुरबानी के लिए तय्यार रहें।

कुछ लोग समझते हैं कि शायद ख़िलाफ़त, मलूकियत (राजा प्रथा) में बदल जाए, जमाअत अहमदिय्या में भी, इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बड़ी सख़्ती से इसका रद्द फ़रमाया, बड़ा खंडन किया और आपने फ़रमाया कि मलूकियत अहमदिय्या जमाअत में नहीं आएगी जब तक रूहानियत और तक़वा क़ायम है, इन्शाल्लाह तआला. निज़ामे ख़िलाफ़त जो है, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह व्यवस्था है जो अल्लाह तआला की इच्छानुसार क़ायम हुआ और उसी के अनुसार चलता रहेगा, न कि किसी प्रकार की सांसारिक बादशाहत इसमें आएगी. ख़लीफ़ा-ए-वक़्त तो अपनी नमाज़ों में रातों को उठ कर जमाअत के लोगों के लिए दुआ करता है, क्या कोई राजा ऐसा है जो यह काम करता हो. अत: इस बात को यदि हम याद रखें और इसके

अनुसार कर्म भी करें तो फिर हम कामयाब हो सकते हैं. ख़िलाफ़त का यह ऐसा निज़ाम है कि अल्लाह तआला ख़ुद दिलों को फेरता है, यही अल्लाह ताआला का समर्थन है और सदेव हर एक ख़िलाफ़त के ज़माने में हमने देखा है, अब दुनिया में आज आप भी देख लें कि अहमदिय्या जमाअत ही है जो एक निज़ाम में पिरोई हुई है और अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत से जुड़ी हुई, ख़िलाफ़त से जुड़ी हुई, रहने के कारण इन पर अल्लाह तआला के असंख्य फ़ज़्ल हैं. यह ठीक है कि दुश्मनों की तरफ़ से अहमदिय्या जमाअत पर अत्यधिक कष्टों की भरमार की जा रही है, विशेष रूप से पाकिस्तान में तथा कुछ अन्य देशों में भी, किन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सब अपने ईमान पर क़ायम हैं और इसके बावजूद इस बात पर क़ायम हैं कि ये कठिनाईयाँ हमें हमारे दीन से नहीं हटा सकतीं और इसके बदले में अल्लाह तआला हम पर और हमारी नस्लों पर जो पुरस्कारों की वर्षा कर रहा है, उसका कोई मुक़ाबला ही नहीं है।

अतएव यदि हमने वास्तविक लाभ प्राप्त करना है ख़िलाफ़त की कृपा से, और वास्तविक रूप में अल्लाह तआला की कृपाओं का उत्तराधिकारी बनना है तो फिर हमें हर प्रकार के शिर्क से, अपने अहंकार से तथा अहम् से अपने आपको मुक्ति दिलानी होगी और इनसे अपने आपको पाक करना होगा. फिर अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि ये लोग ऐसे हैं जो नमाज़ का क़याम करने वाले हैं, जो ज़कात की अदाएगी करने वाले हैं. हर अहमदी को अल्लाह तआला के इस आदेश को याद रखना चाहिए, हर अहमदी को जो अपने आपको ख़िलाफ़त से सम्बद्ध समझता है और उसके साथ जुड़ कर रहना चाहता है और उससे लाभान्वित होना चाहता है, उसको यह बात सामने रखनी होगी कि हमने नमाज़ों के क़याम की ओर भरपूर ध्यान देना है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने नमाज़ों के क़याम की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर अति सुन्दर रंग में यह फ़रमाया कि सलात का अति उत्तम भाग जुम: है जिसमें इमाम ख़ुतब: पढ़ता है और नसीहतें करता है जिससे क़ौमी एकता एवं अखंडता पैदा होती है, सबका क़िबला एक तरफ़ रखता है. आजकल मैं इस्लाम के इतिहास पर बातें कर रहा हूँ. आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के विषय में बातें कर रहा हूँ, इसमें भी कई बातें ऐसी आ जाती हैं जो हमारे लिए नसीहत होती हैं और लोग इनके द्वारा बड़े लाभान्वित हो रहे हैं, इसके अतिरिक्त कि उनको इस्लाम के इतिहास का पता लग रहा है। अत: यह ख़िलाफ़त ही वह माध्यम है जो अल्लाह तआला ने हममें पैदा किया हुआ है, जिसके द्वारा एक इकाई अहमदिय्या जमाअत में पैदा हो गई है और दुनिया के दो सौ पन्द्रह देशों में रहने वाला हर अहमदी एक इकाई बन कर इस निज़ाम से जुड़ा हुआ है और अपना सुधार करने का प्रयास करता है. अल्लाह तआला ने ज़कात अदा करने का भी आदेश दिया है, यह भी अपनी धन सम्पत्ति को पवित्र करने के लिए अनिवार्य है, इसमें शेष अन्य क़ुर्बानियाँ भी शामिल हैं. आज हम देखते हैं कि केवल अहमदिया जमाअत के द्वारा ही यह अर्थ व्यवस्था जारी है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनके कारण कुछ स्थानों पर कुछ कठिनाईयाँ भी आ रही हैं, परन्तु जो अहमदी हैं वे इन समस्त दुविधाओं को देखने के बावजूद इस बात पर अल्लाह का शुक्र करते हैं कि हमारे अन्दर ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम है जो हमें संतुष्टि भी देता है और हमारी आवश्यकताओं को भी पूरा करने का प्रयास करता है. हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया था कि दुनिया में कई घटनाएँ प्रकट

होंगी, कुछ तो प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएँ हैं, कुछ इंसानों की अपनी ग़लतियों के कारण युद्ध हो रहे हैं और उपद्रव पैदा हुए हैं. यदि इन लोगों ने अब भी अल्लाह तआला की ओर ध्यान नहीं दिया तो फिर एक विनाश दुनिया पर आने वाला है जिसकी हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने कई बार पेशगोई फ़रमाई है, अतएव ख़िलाफ़त की व्यवस्था के साथ जुड़ने वालों का दायित्व है कि वे इस तरफ़ ध्यान दें कि हमने दुनिया को भी विनाश से बचाना है और फिर इसके लिए दुनिया को अल्लाह तआला की ओर लाने का भरसक प्रयास करें और पैग़ाम को पहुंचाने के लिए अपने यथासम्भव संसाधनों एवं प्रतिभाओं को उपयोग में लाएं और इसके लिए अल्लाह तआला के विशेष फ़ज़ल हर अहमदी पर हों और वह अपनी नस्लों को और अपने आपको भी आपदाओं से बचाने वाला होगा, क्यूंकि ये आपदाएँ एवं विनाश जो हैं ये अत्यधिक गंभीर स्थिति धारण करती चली जा रही हैं और पता नहीं कि आगे और क्या स्थिति धारण करें जिसकी कल्पना मानव भी नहीं कर सकता. अतएव हमें सदेव याद रखना चाहिए कि अहमदिय्या ख़िलाफ़त के साथ जुड़ने से ही अब दुनिया की सलामती है।

हुज़ूरे ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. का एक उद्धरण पेश करते हुए फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि इस दुनिया का समापन नहीं होगा जब तक अल्लाह तआला मेरे सब वादे पूरे न कर दे, कुछ मेरे जीवन काल में और कुछ मेरे बाद. अत: हममें से हर एक का काम है कि ख़ुदा की प्रतिष्ठा दिलों में बिठाने वाले बनें और क्रियात्मक रूप में ख़ुदा तआला की तौहीद को अभिव्यक्त करने वाले, सम्पूर्ण आज्ञा पालन का नमूना दिखाने वाले और ईमान में उन्नति करते चले जाने वाले हों. अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हममें से हर एक ख़िलाफ़ते अहमदिय्या को क़ायम रखने के लिए हर क़ुरबानी के लिए तय्यार रहे और हम जो प्रतिज्ञा करते हैं, उसे पूरा करने वाले हों, और अल्लाह तआला हमारे जीवन में ऐसा ज़माना लेकर आए कि जब हम देखें कि दुनिया में अल्लाह तआला की वहदानियत (एकेश्वरवाद) का झंडा हर जगह लहरा रहा है और आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में लोग झुंड के झुंड होकर आ रहे हैं और अल्लाह तआला के सम्पूर्ण आज्ञा पालकों में से बनने की कोशिश कर रहे हैं, वही दिन है जो हमारे लिए ऐसा बरकत वाला दिन होगा जब हम कहेंगे कि ख़िलाफ़त का जो अल्लाह तआला ने वादा किया था उसकी बरकतों से आज हम लाभान्वित हो रहे हैं. और यही दिन हैं जो दुनिया को विनाश से बचाने वाले दिन होंगे. अल्लाह तआला हमें अपना सुधार करने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अल्लाह तआला के सन्देश को दुनिया में पहुँचाने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में मुकर्रम कर्नल डा. पीर मुहम्मद मुनीर साहब, पूर्व संचालक फ़ज़ले उमर हस्पताल, रबवा, और मुकर्रमा सलीमा ज़ाहिद साहिबा पत्नी समीउल्लाह ज़ाहिद साहब, मुरब्बी सिलसिला, निवासी केनेडा की जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का एलान फ़रमाया और मृतकों की मगफ़िरत एवं दर्जों की बुलंदी के लिए दुआ की।

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात - 18001032131

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के पवित्र उपदेश

अनुवादक फरहट अहमद आचार्य

हैदराबाद से आकर नई बैअत करने वालों को नसीहतें

20 मई 1904 स्थान गुरदासपुर

असर की नमाज़ के पश्चात हैदराबाद (दक्षिण) के कुछ व्यक्तियों ने बैअत (दीक्षित) की। बैअत के पश्चात हुज़ूर ने भाषण देते हुए फ़र्माया।

"आपने जो मुझ से आज बैअत का सम्बन्ध बनाया है तो मैं चाहता हूँ कि कुछ शब्द उपदेश के तौर पर तुम्हें कहूं। यह याद रखना चाहिए कि मानव जीवन का कोई भरोसा नहीं। अगर कोई व्यक्ति ख़ुदा पर विश्वास रखे और फिर क़ुर्आन करीम पर गौर करे कि ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में क्या कुछ फ़र्माया है तो वह व्यक्ति दीवाना वार संसार को त्याग कर ख़ुदा हो जाए। यह पूर्णतया सत्य कहा गया है कि दुनियां रोज़े चन्द आक़बत ब ख़ुदावन्द। अब ख़ुदा तआला की वाणी से स्पष्ट होता है कि जो मनुष्य ख़ुदा तआला की ओर आना चाहता है और वास्तविक तौर पर उसका दिल ऐसा नहीं कि उसने (दीन) धर्म को संसार पर सर्वोच्चता दी तो ख़ुदा तआला के समीप दोषी ठहरता है। हम इस दुनिया में देखते हैं कि इसके उद्देश्य प्राप्त करने के लिए जब तक काफ़ी हिस्सा अपना इनकी पूर्ति में ख़र्च न कर दे वे उद्देश्य प्राप्त होने असंभ्व हैं। उदाहरणतया अगर वैदय / वैद्य एक दवाई (औषधि) और उसकी एक मात्रा निश्चित कर दें और एक बीमार वह मात्रा दवाई की तो नहीं खाता बल्कि थोड़ा भाग दवाई का खाता है तो उससे क्या लाभ होगा। एक व्यक्ति प्यासा है तो संभव नहीं कि एक बूंद पानी से उनकी प्यास दूर हो सके। इसी तरह जो एक व्यक्ति भूखा है वह एक निवाले से संतुष्ट नहीं हो सकता। इसी प्रकार ख़ुदा तआला या उसके रसूल पर ज़बानी विश्वास ले आना या एक दिखावे के तौर पर बैअत कर लेना बिल्कुल बेकार है। जब तक इन्सान पूरी शक्ति से ख़ुदा तआला के मार्ग में लग न जाए। आत्मा का कल्याण इसी में है कि मनुष्य पूरे तौर पर वह भाग ले जो रूहानी जीवन के लिए ज़रुरी है केवल ये विचार कि मैं मुसलमान हू काफ़ी नहीं।

मैं (नसीहत) उपदेश देता हूँ कि आपने जो सम्बन्ध मुझ से पैदा किया है ख़ुदा तआला इसमें बरकत डाले। इसको बढ़ाने और मज़बूत करने कि फ़िक्र में हर समय लगे रहें। लेकिन याद रहे कि केवल स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं जब तक अमली रंग से अपने आप को रंगीन न किया जाए।

अल्लाह तआला फ़र्माता है :-

احسب الناسُ ان يتركوا ان يقولو اٰمنّا وهم لا يفتنون (अनअनकबूत आयत 3)

अर्थात क्या मनुष्य ने यह सोच समझ लिया है कि हम ......(ईमान ले आये) कह कर ही छुटकारा पा लेंगे और क्या वे परखे नहीं जाएंगे तो वास्तिवक अर्थ यह है कि ये आज़माइश इसी लिये है कि ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि क्या ईमान लाने वाले ने अभी दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दी है या नही। आज कल इस युग में जब लोग ख़ुदा तआला के मार्ग को अपने इरादों के विरुद्ध पाते हैं या किसी स्थान पर अधिकारियों से उनको कुछ ख़तरा होता है तो वे ख़ुदा की राह (मार्ग) का इन्कार कर बैठते हैं। ऐसे लोग बेईमान हैं, वे नहीं जानते कि वास्तविक रूप में ख़ुदा ही सर्वोत्तम अधिकारी है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि ख़ुदा तआला का मार्ग बहुत कठिन मार्ग है और यह बिल्कुल सत्य है कि जब तक इन्सान ख़ुदा तआला के मार्ग में अपनी खाल अपने हाथ से न उतार ले तब तक वह खुदा की दृष्टि में प्रिय नही होता। हमारे समीप भी एक बेवफ़ा नौकर किसी के योग्य नहीं। जो नौकर (सिदक़) सच्चाई और वफ़ा नहीं दिखलाता वह कभी स्वीकृत नहीं होता। इसी प्रकार ख़ुदा के दरबार में वह व्यक्ति निम्न दर्जे का असभ्य है जो कुछ दिनों के सांसारिक लाभ पर दृष्टि लगा कर ख़ुदा तआला को छोड़ता है।

बैअत (दीक्षित) का अर्थ ख़ुदा तआला को जीवन अर्पित कर देना है। इसका अर्थ यह है कि हमने अपना जीवन आज ख़ुदा तआला के हाथ बेच दिया। ये पूर्णतया ग़ल्त है कि खुदा तआला के मार्ग में चलकर अन्तत: कोई व्यक्ति हानि उठाए। सच्चा कभी कोई हानि नहीं उठा सकता। हानि उसी की है जो झूठा है जो दुनिया के लिए बैअत को और वचन को जो अल्लाह तआला से उसने किया है तोड़ रहा है वह व्यक्ति जो केवल संसार के भय के कारण ऐसे कार्य करता है वह याद रखे कि मृत्यु के समय कोई बादशाह या अधिकारी उसे छुड़ा न सकेगा इन्सान ने मरने के बाद सबसे बड़े फैसला करने वाले के पास जाना है जो उस से पूछेगा कि तूने मेरा ख़्याल क्यों न किया।

मसीह की मृत्यु का वर्णन

और हमारी समस्याएं तो वे भी पूर्णत्या स्पष्ट हैं। उदाहरणतया क़ुर्आन करीम की यह आयत :-

فلما توفیتنی کنت انت الرقیب علیھم

इसमें एक उत्तर और एक प्रश्न है। ख़ुदा तआला मसीह अलैहिस्सलाम से पूछेगा कि क्या तूने लोगों को ऐसी शिक्षा दी थी कि मुझे और मेरी माता को पूज्य जीवित बना लेना? तो वे उत्तर में यह कहेंगे कि ऐ ख़ुदाया! जब तक मैं जीवित रहा और उनमें रहा मैंने तो उनको ऐसी शिक्षा नहीं दी। हां मगर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उनका निरीक्षक था मुझे कोई ज्ञान नहीं कि मेरे पीछे उन्होंने क्या किया। यह कैसी मोटी बात है कि स्वयं मसीह अलैहिस्सलाम अपने मृतक होने को स्वीकार करते हैं वह कहते हैं। कि अगर ईसाई बिगड़े तो मेरी मृत्यु के पश्चात बिगड़े। जब तक मैं उनमें जीवित रहा तब तक वे सही सिद्धान्त पर क़ाईम थे। अब अगर ईसाई बिगड़ गए है तो ज़रुर मसीह मर चुका है और अगर मसीह आज तक नहीं मरा तो ईसाई भी नहीं बिगड़े। और अगर ईसाई नहीं बिगड़ा तो

आवश्य ही हज़रत मसीह की ख़ुदाई का सिद्धान्त भी सही है। फिर मसीह का यह कह देना कि मुझे तो उनके बिगड़ने का ज्ञान ही नहीं जैसा कि इसी आयत में पाया है जाता है, क्या ये उत्तर उनका झूठा नहीं होगा? अगर उनका दोबारा संसार में आना सही है, क्योंकि प्रश्न उत्तर तो क़यामत को होगा और अगर उन्होंने दोबारा दुनिया में आकर चालीस वर्ष जीवित रहना है और इसाइयों और काफ़िरों को क़त्ल करके इस्लाम फैलाना है तो अवश्य ही उन्होंने ईसाइयों की बिगड़ी हुई दशा को देख लिया है और इस बिगड़ी हुई दशा को देखकर वह दोबारा इस दुनियां से चले जाऐंगे तो फिर हज़रत मसीह का यह जवाब देना ख़ुदा के समीप झूठ ठहरता है। क्या वे सर्वोच्च अधिकारी न कहेगा कि तू दोबारा दुनियां में गया और तूने देख लिया कि तेरी क़ौम बिगड़ चुकी थी। एक सांसारिक अधिकारी के सामने ग़लतब्यानी, झूठी कसम एक ख़तरनाक अपराध है, तो क्या एक अंतर्यामी हाकिम के दरबार में ऐसा झूठा ब्यान दिया जा सकता है ?... तो परिणाम स्वरूप इस आयत ने बड़ी सफाई के साथ एक ओर मसीह की मृत्यु (वफ़ात) को प्रमाणित कर दिया और दूसरी ओर उनके दोबारा दुनियां में आने का खंडन किया (झुठलाया)। इसी के साथ जब हम हदीसों पर विचार करते हैं तो वहां से भी यही (मसीह की मृत्यु) का परिणाम निकलता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया और यह सर्वसम्मित (मुतफ़िक़ अलैहे) हदीस है कि मैंने हज़रत मसीह को हज़रत यहया के साथ देखा। हज़रत यहया का मर जाना और उनका इस जमाअत में प्रवेश करना जिनकी मौत हो चुकी है प्रमाणित बात है। अब यह कैसे हो सकता है कि मसीह बग़ैर मरे किसी ऐसे आदमी के साथ बैठे हो जो दुनियां से मर चुका है अब एक ओर ख़ुदा का कथन और दूसरी ओर (रोईयत) रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वफ़ाते मसीह और उनका दोबारा दुनिया में वापस न आना पूर्णतया प्रमाणित हो गया। अब भी यह लोग अगर हयाते मसीह (मसीह के जीवित होने) के सिद्धान्त से बाज़ न आएं तो यही समझा जाएगा कि सच्ची हिदायत और सौभाग्य केवल ख़ुदा तआला की ओर से ही मिलता है।

आने वाला मसीह उम्मती होगा

रहा यह कि आने वाला कौन है? इसका फ़ैसला भी क़ुर्आन और हदीस में कर दिया है। 'सूर नूर' में साफ़ तौर पर वर्णन किया है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़लीफ़े (उत्तराधिकारी) इस उम्मत में से होंगे। बुखारी और मुस्लिम का भी यही मत है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा, अब एक ओर क़ुर्आन व हदीस से 'बनी इसराईली' मसीह की मौत और दोबारा न आने का वर्णन करते हैं। दूसरी ओर यही क़ुर्आन और हदीस आने वाले मसीह को इसी उम्मत में से ठहराते हैं, तो फिर इन्तज़ार किस बात का है?

अब निशानियों को भी देख लिया जाए। शताब्दी के सिरे पर मुझद्दिद का आना सबने स्वीकार किया है और यह भी माना है कि मसीह मुझद्दिद के तौर पर शताब्दी के सिर पर आएगा। शताब्दी में से 22 वर्ष गुज़र गए* और इस समय तक मुझद्दिद नज़र न आया। अत: इस शताब्दी के सिर पर

जिस मुझद्दिद ने आना था वह कहाँ है?

*(चौदहवीं शताब्दी पूरी गुज़र कर पन्द्रहवीं शताब्दी में से भी 29 वर्ष गुज़र गऐ हैं) अनुवादक

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण का निशान

मेहदी का निशान सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण था जो रमज़ान में होना था। इन ग्रहणों पर भी आठ साल गुज़र गये महदी न आया (अब तो इस निशान पर 208 वर्ष गुज़र गए हैं अनुवादक । अगर यह कहा जाए कि निशान तो हो गया लेकिन साहिबे निशान (जिसके पक्ष में निशान पूरा होना था) बाद में आएगा, तो यह अकीदा बड़ा बिगाड़ पैदा करने वाला है बल्कि बिगाड़ों की बुनियाद डालने वाला होगा यदि एक समय के पश्चात इकट्ठे बीस आदमी महदी के पद के दावेदार हो जाएँ तो फिर उनमें कौन फैसला करेगा?

आवश्यक है कि साहिबे निशान, निशान के साथ हो। यह लोग मंच पर चढ़ कर शताब्दी के आरम्भ को और सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण को याद किया करते और रोते थे, लेकिन जब वह समय आया तो यही लोग दुश्मन बन गए। हदीस के अनुसार सभी निशान पूरे हो गए, लेकिन यह लोग अपनी ज़िद से बाज़ नहीं आते। ग्रहण का महान निशान प्रकट हो गया लेकिन ख़ुदा तआला के इस निशान की क़दर न की गई।

प्लेग का निशान

इसी प्रकार सारे नबियों की पिछली किताबों और क़ुर्आन व हदीस में एक और मुसीबत की तरफ़ इशारा था जो ग्रहण के आसमानी निशान के पश्चात आने वाली थी और वह ताऊन (प्लेग) है जो वह भी मसीह के युग से सम्बंधित थी। यह एक ख़तरनाक मुसीबत है जिस की ओर हर एक नबी ने खोलकर और संक्षेप में इशारा किया है।

ताऊन आ गई, लाखों इन्सान तबाह हो गए और नहीं पता कि कब तक इसकी तबाही चलती रहेगी, लेकिन जिस मौऊद (जिस सुधारक के आने का वचन दिया गया था के युग की पहचान का यह निशान है उसे अब तक इन लोगों ने नहीं पहचाना इसी तरह धरती और आकाश ने गवाही दी लेकिन इन गवाहियों को व्यर्थ समझा गया। ख़ुदा ग़ैरत वाला है और वह अपनी ग़ैरत दिखाएगा। एक दुनियावी अधिकारी नाफ़रमानी को पसन्द नहीं करता, तो वह सबसे बड़ा हाकिम ख़ुदा कब इस नाफ़रमानी को बिना सज़ा के छोड़ेगा।

नई सवारी का निशान

एक और निशान इस युग का नई सवारी था जिसने ऊंटों को बेकार कर देना था।

क़ुर्आन ने फ़र्माया है :

واذا العشار عطلت

'जब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी' कह कर इस युग का पता बताया। हदीस ने मसीह के निशान में यूं कहा :-

لیُترکن القلاص فلا یسعی علیھا

फिर यह निशान, क्या पूरा नहीं हुआ?

यहां तक कि उस प्रदेश में भी जहां आज तक ऊंटनी की सवारी थी और बिना ऊंटनियों के गुज़ारा न था, वहां भी इस (नई) सवारी का इन्तिज़ाम हो गया है और कुछ वर्षों में ऊंठों की सवारी का नामो निशान न मिलेगा। ऊंठनियां बेकार हो गईं। निशान पूरे हो गए लेकिन जिसके लिए यह निशान था वह पहचाना न गया। क्या यह काम भी मेरे वस में थे कि एक ओर तो मैं दावा करुं और दूसरी ओर यह निशान पूरे होते जाएं, क्या प्रकृति के नियमों में भी मेरा भी दख़ल है, जो नियत् 'ग्रहण का मौऊदै' पैदा कर लेता। अथवा मेरे हाथ कोई ऐसे साधन है जिन से धरती पर 'मौऊद ताऊन' पैदा हो गई? या हज का रोकना कि जो यह भी मसीह का निशान था। क्या यह भी मेरे इशारे (संकेत) से हुआ? इसी प्रकार बीसीयों निशान मसीह से संम्बन्धित थे, वे सब पूरे हो गए। ख़ुदा तआला ने कौन सी दलील को उन पर पूरा नहीं किया, लेकिन इनका इन्कार अभी इस तरह है।

वास्तविकता यह है कि ज़माने में दैहरिय्यत (नास्तिकता) फ़ैली हुई है। जो धीरे-धीरे सब दिलों को प्रभावित कर रही है। अल्लाह का डर दिन प्रतिदिन समाप्त हो रहा है। कान रखते हैं पर सुन नहीं सकते। आँखे रखते हैं पर देखते नहीं। दिल रखते हैं पर नहीं समझते। यही कारण है कि इन्कारी हैं – वरना तो बात बहुत स्पष्ट थी। मेरी किताबों के अध्ययन से यह बात पूर्णतया स्पष्ट और प्रमाणित हो सकती है। अब उनके पास कोई उत्तर नहीं। ख़ुदा तआला ने मज़बूत दलीलों से उनकी जड़ काट दी है परन्तु यह नहीं देखते।

मामूर की पहचान के तीन तरीके

ख़ुदा की तरफ़ से भेजे गये एक व्यक्ति की पहचान के तीन तरीके हैं:- 1. नक्ल (इलाही किताबों के प्रमाण और भविष्यवाणियां 2. अक़्ल (अकली प्रमाण) और 3. ईश्वरीय सहायता। अब देखना चाहिए कि यह तीनों बातें इस सिलसिले की समर्पक है। दानियाल और दूसरे नबियों ने तो इस का आने का ज़माना निश्चित कर दिया है।

यहाँ तक कि शताब्दी और साल निश्चित कर दिया है। सारे ईसाइयों में एक प्रकार की घबराहट पैदा हुई है। क्यूँ कि पुरानी पुस्तकों के अनुसार मसीह के आने का समय हो चुका है। और मसीह अभी तक आया नहीं इसलिए कुछ उल्मा विवश होकर इस तर्फ गए हैं कि मसीह के दूसरी बार आने का भाव कलीस (इसाईमत) * की उन्नति से है जो हो चुकी है।

*रेवया अलबदर 8 अगस्त 1904

इसी प्रकार हमारी किताबों के अनुसार भी मसीह के आने का ज़माना यही है। होजाजुल किरामा के लेखक ने लिखा है ? कि सब अहल – ए- कशूफ इसी तर्फ गए हैं कि मसीह के दोबारा आने के लिए चौदहवीं सदी निश्चित है। शाह वली उल्लाह साहिब ने भी इसी ज़माने के लिए उसे चिराग़ उद्-दीन कहा है परिणाम स्वरुप प्रत्येग बुज़ुर्ग ने जो ज़माना निश्चित किया है वो चौदहवीं सदी से आगे नहीं गया। यद्यपि उनमें कुछ विरोधाभास हैं। चौदहवीं सदी में संकेत इस ओर था कि इस्लाम धर्म चौदहवीं रात के चाँद के समान इस ज़माने में चमक उठेगा।

जिस प्रकार चाँद का कमाल चौदहवीं रात को होता है उसी प्रकार इस्लाम का कमाल सारी दुनिया में चौदहवीं सदी में प्रकट होगा।

13 वीं शताब्दी का अंधकार इन लोगों में मशहूर है। कुछ कहते हैं कि इस शताब्दी के विद्वानों और उलामा से भेड़ियों ने भी मुक्ति माँगी थी। यह लोग चौदहवीं शताब्दी की प्रतीक्षा कर रहे थे परन्तु जब शताब्दी आ गई तो अपनी बद किस्मती के कारण इन्कार कर गए।

अक्ल के नज़दीक भी मसीह का ज़माना यही लगता है। इस्लाम इतना कमज़ोर हो गया है कि एक समय में एक व्यक्ति के धर्मभ्रष्ट हो जाने से इसमें शोर पड़ जाता था। परन्तु अब लाखों लोग धर्म भ्रष्ट हो गए। दिन रात इस्लाम के विरुद्ध पुस्तकें लिखी जा रही हैं। इस्लाम को जड़ से उखेड़ने के लिए कई प्रकार के निर्णय लिए जा रहे हैं। अक़्ल पसन्द नहीं करती कि जिस ख़ुदा ने

انا نحن نزلنا الذکر وانا له لحافظون

(अर्थात हमने ही इस क़ुर्आन को उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करेंगे) का वचन दिया है।

वह इस समय इस्लाम की सुरक्षा न करे और चुप रहे। यह ज़माना किस प्रकार की मुसीबत का ज़माना है कि शरीफ़ लोगों की सन्तान इस्लाम की दुश्मन होकर गिर्जा घरों में चली गई और खुले आम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनादर हो रहा है। हर एक प्रकार की गाली और अपशब्द में उनको याद किया जाता है। इन सब बातों के यदि देखा जाए तो अक़्ल कहती है कि यही समय ख़ुदा तआला के समर्थन का है। और मैं तुम को सच कहता हूँ कि यदि यह सिलसिला स्थापित न होता तो इस्लाम बर्बाद हो चुका था, तो ख़ुदा तआला के अस्तित्व का यह भी एक निशान है कि ठीक समय पर ख़ुदा तआला ने इस सिलसिले को क़ायम किया और मुसीबत के समय इस्लाम को संभाला।

इलाही मदद अगर देखी जाए तो यहां भी एक बड़ा ख़ज़ाना है। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से हज़ारों निशान मेरे हाथ पर प्रकट किए। यदि में इन सब निशानों को जमा करुँ जो प्रतिदिन मैं और मेरे साथ रहने वाले देखते हैं तो उनकी गिनती लगभग लाख हो जाती है इसके अतिरिक्त केवल ब्राहीने अहमदिय्या * के कुछ इल्हामों को देखा जाए।

चौबीस वर्ष हुए कि यह किताब लिखी गई जो उस समय मक्का मदीना, मिसर, बुखारा, लंदन

और ऐसा ही हिन्दुस्तान के हर एक भाग में पहुंच गई। कई एक पादरियों और दूसरे इस्लाम विरोधियों के घरों में पहुंच गई। अब इस किताब में उदाहरणतया लिखा है कि ख़ुदा तआला की ओर से मुझे बताया गया है कि इस समय तू अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं लेकिन एक समय आएगा कि लोग तेरे पास दूर दूर से आएंगे।

يأ تون من كل فج عميق

तू लोगों में पहचाना जाएगा और तेरी प्रसिद्धि की जाएगी। तेरी सहायता और समर्थन को दूर दूर से लोग आएंगे फिर कहा कि लोग कसरत (अधिक मात्रा) से आएंगे और तू उनसे नम्रता और शिष्टाचार से पेश आना उनकी मुलाकात से मत घबराना।

ولا تصعر لخق الله ولا تسئم من النّاس

हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की एक पुस्तक जो 1884 ई. में लिखी गई।

फिर अन्त में फ़र्माया

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ وانتهى امرا لزمان الينا۔ آليس هذابالحق

अर्थात जब ख़ुदा तआला की विजय और सहायता आएगी और युग का हुक्म (आदेश) हमारी तर्फ ही व्युत्पन्न होगा तो उस समय कहा जाएगा कि क्या यह सिलसिला सत्य नहीं? अब लाहौर और अमृतसर के लोग और ऐसा ही पंजाब के लोग इस बात से परिचित हैं कि ब्राहीने अहमदिया के प्रकाशित होने के समय मुझे कोई जानता नहीं था यहां तक कि क़ादियान में बहुत कम लोग होंगे जो मुझे पहचानते होंगे फिर ये बातें किस प्रकार पूरी हो रहीं हैं। अगर यह भविष्यवाणियां मुकम्मिल तौर पर अभी पूरी नहीं हुईं लेकिन जितनी आकाशवाणियां प्रकट हो रही है वह सत्य के इच्छुक के लिए प्रर्याप्त हैं। अब क्या वह मेरी बनावट है कि एक इन्सान आज से चौबीस वर्ष पहले की घटनाओं का नक्शा खींच सकता है। क्या कोई कह सकता है कि वह हज़ारों प्राणि वर्ग का शरण स्थल होगा। मुख्यता जबकि एक समय तक ये मामले प्रकट न हुए हों। जिस से पूर्णत्या प्रकट होता है कि यह मामले किसी की चातुर्य का परिणाम नहीं हो सकते। इन मामलों को देख कर मैं कह सकता हूँ कि जितने निशान ख़ुदा तआला ने मेरे समर्थन में ज़ाहिर किए हैं वे अपनी संख्या और शान में ऐसे हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त सब नबियों और रसूलों से ऐसे प्रमाणित नहीं हुए परन्तु इसमें मेरा क्या गर्व है यह सब कुछ तो उस पाक नबी की फ़ज़ीलत है जिसकी उम्मत में होने का मुझे गर्व प्राप्त है।

आपने जो आज मुझ से बैअत की है यह बीज बोने की तरह है। चाहिए कि आप अकसर मुझ से मिलते रहें और इस संम्बन्ध को मज़बूत करें जो आज कायम हुआ है। जिस शाख़ का सम्बन्ध वृक्ष से नहीं रहता वह आख़िर सूख कर गिर जाती है जो व्यक्ति जीवित ईमान रखता है वह दुनियां की परवाह नहीं रखता। दुनियां हर एक प्रकार मिल जाती है। दीन को दुनियां पर प्रमुख रखने वाला ही मुबारक है परन्तु जो दुनियां को दीन पर प्राथ्मिकता देता है वह एक मुर्दा की तरह है जो कभी सच्ची सहायता प्राप्त नहीं कर सकता।

बैअत यह बैअत उस समय काम आ सकती है जब दीन को प्रमुख रखा जाए और उसको उन्नत करने के यत्न किए जाएँ। बैअत एक बीज है जो आज बोया गया। अब यदि कोई किसान केवल बीज बोने पर ही संतोष कर ले और फल प्राप्त करने के जो कर्तव्य हैं उनमें से कोई पूरा न करे। न भूमि को ठीक करे और न सिंचाई करे और न खाद ज़मीन में डाले और ही उसकी सुरक्षा करे तो क्या वो किसान किसी फल की आशा कर सकता है? बिल्कुल नहीं। उसका खेत ज़रूर बर्बाद होगा। खेत उसी का रहेगा जो पूरा ज़मींदार बनेगा। तो एक प्रकार का बीज आपने भी आज बोया है। ख़ुदा तआला जानता है कि किस की क़िस्मत में क्या है परन्तु सौभाग्यशाली वही है जो इस बीज को सुरक्षित रखे और अपने तौर पर उन्नति के लिए दुआ करता रहे। उदाहरणतया नमाज़ों में एक प्रकार का परिवर्तन होना चाहिए।

नमाज़ के बाद दुआ

मैं देखता हूँ कि आजकल लोग किस प्रकार नमाज़ पढ़ते हैं वह केवल टक्करें मारना हैं। उन की नमाज़ में इतनी लीनता और आनन्द भी नहीं होता जितना वह नमाज़ के बाद हाथ उठा कर दुआ में दिखाते हैं। काश यह लोग अपनी दुआएँ नमाज़ में ही करते। शायद उनकी नमाज़ों में लीनता पैदा हो जाती। इस लिए मैं आपको आदेश के तौर पर कहता हूँ कि फ़िलहाल आप बिल्कुल नमाज़ के बाद दुआ न करें। मेरा मतलब यह नहीं कि नमाज़ के बाद दुआ करने की मनाही है परन्तु मैं चाहता हूँ कि जब तक नमाज़ में आन्नद और लीनता पैदा न हो तब तक नमाज़ के बाद दुआ करने में नमाज़ के आन्नद को मत गंवाओ। हाँ जब यह लीनता पैदा हो जाए तो फिर कोई हर्ज नहीं। बेहतर है कि नमाज़ में दुआएँ अपनी भाषा में मांगो। जो स्वाभाविक जोश किसी की मातृभाषा में होता है वह किसी दूसरी भाषा में बिल्कुल नहीं पैदा हो सकता। तो नमाज़ों में क़ुर्आन और मासोरह दुआओं (हदीस की दुआएँ) के बाद अपनी ज़रुरतों को दुआ के रूप में अपनी भाषा में ख़ुदा तआला के सम्मुख पेश करो ताकि धीरे-धीरे तुम को आन्नद आए।

अहमदी नाम क्यूँ रखा गया

एक मौलवी साहिब आए और उन्होंने प्रश्न किया कि ख़ुदा तआला नें हमारा नाम मुसलमान रखा है आपने अपने समप्रदाय का नाम अहमदी क्यूँ रखा है?
यह बात هو سمّٰكم المسلمين (अर्थात उस ख़ुदा ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है) के विरुद्ध है। इसके उत्तर में हज़रत ने फ़र्माया :- इस्लाम बहुत पवित्र नाम है और क़ुर्आन शरीफ़ में यही नाम आया है लेकिन जैसा कि हदीस शरीफ़ में आ चुका है इस्लाम के 73 फ़िर्के हो गए हैं। और प्रत्येक फ़िर्का अपने आप को मुसलमान कहता है। इन्ही में एक राफज़ियो (शियों) का ऐसा फ़िर्का है जो सिवाए दो तीन व्यक्तियों के सब सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम को अपशब्दो से याद करते है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों को गालियां देते हैं। औलिया उल्लाह को बुरा कहते हैं। फिर भी मुसलमान कहलाते हैं। ख़ारजी

हज़रत अली रज़ी अल्लाह और हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हुम को बुरा कहते हैं और फिर भी मुसलमान नाम रखते हैं

शाम में एक फ़िर्का यज़ीदिया है जो इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह के लिए अपशब्द कहते हैं और मुसलमान बने फिरते हैं। इसी मुसीबत को देख कर पहले समय के लोगों ने अपने आप को ऐसे लोगों से अन्तर करने के लिए अपने नाम शाफ़ी, हम्बली, * आदि रखे। आज कल नेचरियों का एक ऐसा फ़िर्का निकला है जो जन्नत, दोज़ख, वही, फ़रिश्ते, सब बातों का इन्कार करते हैं। यहां तक कि सय्यद अहमद खां का विचार था कि क़ुर्आन मजीद भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विचारों का परिणाम है, और ईसाइयों से सुनकर यह क़िस्से लिख दिए हैं। इस लिए इन सब सम्प्रदायों से अपने आप को अलग करने के लिए इस फ़िर्का का नाम अहमदिय्या रखा गया।

हज़रत यह भाषण दे रहे थे कि इस मौलवी ने फिर प्रश्न किया कि क़ुर्आन शरीफ़ में तो आदेश है कि لا تفرّقوا और आप ने तो यह फूट डाल दी।

हज़रत ने फ़र्माया :-

हम तो फूट नहीं डालते। अपितु हम फ़ूट दूर करने के लिए आए हैं।

यदि अहमदी नाम रखने में अनादर है तो फिर शाफ़ी, हम्बली कहलाने में भी अनादर है मगर यह नाम उन बड़े लोगों के रखे हुए हैं जिन को आप भी नेक मानते हैं। वो व्यक्ति बड़ा अभागा होगा जो ऐसे लोगों पर एतराज़ करे। और उनको बुरा कहे। केवल अन्तर करने के लिए उन लोगों ने अपने

*इसी प्रकार विभिन्न वर्गों ने देवबन्दी, बरेलवी, चकड़ालवी, नकश्बन्दी आदि नाम रख लिये हैं।

यह नाम रखे थे। हमारा काम अल्लाह की ओर से है और हम पर ऐतराज़ करने वाला ख़ुदा तआला पर ऐतराज़ करने वाला ख़ुदा हम पर ऐतराज़ करता है। हम मुसलमान हैं और अहमदी एक अऩ्तर करने के लिए रखा गया नाम है।

यदि केवल मुसलमान नाम हो तो पहिचान कैसे होगी ख़ुदा तआला एक जमाअत बनाना चाहता है। और इसका दूसरों से अन्तर होना आवश्यक है। बिना अन्तर किए इसके लाभ ज़ाहिर नहीं होते। और केवल मुसलमान कहलाने से अन्तर नहीं किया जा सकता।

इमाम शाफ़ी और इमाम हन्बल आदि का ज़माना भी ऐसा था कि उस समय बिदअतें (दीन में नई बातें अपनी ओर से घड़ लेना) आरम्भ हो चुकी थीं। यदि उस समय यह नाम न होते तो उचित और अनुचित में अन्तर नहीं हो सकता था। हज़ारों बुरे व्यक्ति मिले जुले रहते। यह चार नाम इस्लाम के लिए चार दीवारी के समान थे। यदि यह लोग पैदा न होते तो इस्लाम ऐसा संदिग्ध मज़हब हो जाता कि बिदअती और गैर बिदअती में अन्तर न हो सकता। अब ऐसा भी समय आ गया है कि घर-घर एक मज़हब है। हमको मुसलमान होने से इन्कार नहीं मगर फूट दूर करने के लिए यह नाम रखा गया है। पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौरेत वालों से विरोध किया और साधारण लोगों की दृष्टि में फ़ूट डालने वाले बने। परन्तु वास्तविक्ता यह है कि यह फूट ख़ुदा स्वयं डालता है। जब खोट और

मिलावट अधिक हो जाती है ख़ुदा तआला स्वयं चाहता है कि अन्तर किया जाए।

मौलवी साहिब ने फिर वही प्रश्न किया कि ख़ुदा ने तो कहा कि

هو سمّٰکم المسلمینؕ

फ़र्माया :- क्या इसमें राफज़ी और बिदअती और आजकल के नाजाएज़ काम करने वाले मुसलमान शामिल हैं? क्या इसमें आजकल के वह लोग शामिल हैं जो अबाहती हो रहे हैं और शराब तथा बदकारी को भी इस्लाम में उचित तथा जाएज़ जानते हैं।

बिल्कुल नहीं। इसके संबोधक तो सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम हैं। हदीस शरीफ़ में आता है कि (हिजरत के) तीन सदियों पश्चात फ़ैज़ अवज (टेड़ा फ़िरका) का ज़माना होगा। जिसमें झूठ का बोलबाला होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस समय के लोगों के बारे में फ़र्माया है। और ना मेरा उनसे कोई सम्बन्ध है। वह लोग मुसलमान कहलाएगें मगर मेरे साथ उनका कोई सम्बन्ध न होगा

जो लोग इस्लाम के नाम से इन्कार करें या इस नाम से घृणा करें उन को तो में धिक्कारता हूँ। मैं कोई बुराई नहीं लाया। जैसा कि हन्बली शाफ़ी आदि नाम थे ऐसा ही अहमदी भी नाम है। बल्कि अहमद के नाम में इस्लाम के संस्थापक अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ समन्वय है। और यह समन्वय दूसरे नामों में नहीं। अहमद, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम है इस्लाम अहमदी है और अहमदी इस्लाम है। हदीस शरीफ़ में मोहम्मदी रखा गया है। कई बार शब्द अनेक होते हैं मगर अर्थ एक ही होता है। अहमदी नाम एक विशेष निशान है। आजकल इतना तूफ़ान ज़माने में है कि शुरु से लेकर अब तक कभी नहीं हुआ। अइसलिए कोई नाम आवश्यक था। ख़ुदा तआला के समीप जो मुसलमान हैं वह अहमदी हैं।

बदर प्रति 1 पृष्ठ 2:4 3 नवम्बर 1905 (मलफ़ूज़ात प्रति 8 पृष्ठ 180 : 182)

शत्रुता और विरोध पर धैर्य रखने की नसीहत

एक आदमी ने कहा कि मेरे गाँव में एक मौलवी जो मदरसे में सेवक हैं। बहुत विरोधी हैं और मुझे बहुत कष्ट देता है। हुज़ूर दुआ करें कि ख़ुदा तआला इसका तबादला वहाँ से कर दे। हज़रत अक़दस ने इस अवसर पर मुस्कुकाते हुए इस तरह समझाया कि इस जमाअत में जब दाख़िल हुए हो तो इसकी शिक्षा पर अमल करो। यदि कष्ट ना पहुँचे तो फिर सवाब (पूण्य) कैसे हो। पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में 13 वर्ष दु:ख सहन किए। तुम लोगों को उस समय के दु:खों और मुसीबतों की ख़बर नहीं और न वह तुमको पहुँची हैं। मगर आप ने सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम को सबर (धैर्य) करने की ही शिक्षा दी। अन्तत: सारे शत्रु ख़त्म हुए। एक समय निकट है कि तुम देखोगे कि यह शरारती लोग भी नज़र न आएँगें। अल्लाह तआला ने यह इरादा किया है कि इस पाक जमाअत को सारे संसार में फैलाएगा। अब इस समय यह लोग तुम्हारी संख्या कम देख कर तुम्हें कष्ट देते हैं मगर जब यह जमाअत बड़ी हो जाएगी तो यह सब स्वयं ही चुप हो जाएँगें। यदि ख़ुदा तआला

चाहता तो यह लोग दु:ख न देते और दु:ख देने वाले पैदा न होते मगर ख़ुदा तआला उन के द्वारा धैर्य का उपदेश देना चाहता है। थोड़े समय धैर्य करने के बाद देखोगे कि कुछ भी नहीं है। जो व्यक्ति कष्ट देता है वह या तो तौबा कर लेता है या समाप्त हो जाता है। कई पत्र इस प्रकार के आते हैं कि हम गालियां देते थे और इसे पुण्य मानते थे परन्तु अब तौबा करते हैं और बैअत करते हैं। सबर करना भी एक प्रकार की इबादत है। ख़ुदा तआला फ़र्माता है कि धैर्य करने वालों को वो बदले मिलेंगे कि जिन की कोई गिनती नहीं है। अर्थात उन पर अनगिनत इनाम होंगे।

यह बदला केवल सबर करने वालों के लिए है। दूसरी इबादत के लिए ख़ुदा का यह वचन नहीं। जब एक व्यक्ति एक (ख़ुदा) की सहायता में जीवन बिताता है तो जब उसे दु:ख पर दु:ख पहुचता है तो अंतत: सहायता करने वाले को गैरत आती है और वह दु:ख देने वाले को नष्ट कर देता है। इसी प्रकार हमारी जमाअत ख़ुदा तआला की हिदायत में है। और कष्ट और दु:ख सहने करने से ईमान मज़बूत हो जाता है। धैर्य जैसी कोई चीज़ नहीं हैं। (मलफ़ूज़ात प्रति 4 पृष्ठ 234235)

मस्जिदों की आवश्यकता

इस समय हमारी जमाअत को मस्जिदों की बहुत आवश्यकता है। यह खाना ख़ुदा होता है। जिस गाँव या शहर में हमारी जमाअत की मस्जिद स्थापित हो गई तो समझो कि जमाअत की तरक्की की बुनियाद पड़ गई। यदि कोई ऐसा गाँव हो या शहर जहाँ मुसलमान कम हों या न हों और वहाँ इस्लाम की उन्नति करनी हो तो एक मस्जिद बना देनी चाहिए। फिर ख़ुदा स्वयं मुसलमानों को खींच लाएगा। परन्तु शर्त यह है कि मस्जिद की स्थापना में निय्यत दीनदारी की हो। केवल ख़ुदा के लिए ही इसे किया जाए व्यक्तिगत उद्देश्यों या किसी बुराई का बिल्कुल दख़्ल न हो तब ख़ुदा बरकत देगा।

यह आवश्यक नहीं कि मस्जिद आलीशान तथा पक्की इमारत की हो केवल ज़मीन रोक लेनी चाहिए और वहाँ मस्जिद की हदबन्दी कर देनी चाहिए। और बाँस आदि का कोई छप्पर आदि डाल दो कि वर्षा से आराम हो। ख़ुदा तआला बनावट को पसन्द नहीं करता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद कुछ खजूरों की शाखों की थी और इसी तरह चली आई। फिर हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हु ने इस लिए कि इन को इमारत का शौक़ था अपने समय में उसे पक्का बनवाया। मुझे विचार आता है कि हज़रत सुलैमान और उसमान एक ही बनावट के नाम हैं।

शायद इसी वजह से उनको इन बातों का शौक़ था। जमाअत की अपनी मस्जिद होनी चाहिए। जिसमें अपनी जमाअत का इमाम हो और वह उपदेश वग़ैरह करे और जमाअत के लोगों को चाहिए कि सब मिल कर उसी मस्जिद में नमाज़ बा जमाअत अदा किया करें जमाअत और संगठन में बहुत बरकत है। तफ़रीक से फूट पैदा होती है और यह समय ऐसा है कि अब मेल जोल और इत्तिफ़ाक़ को बढ़ावा देना चाहिए और छोटी छोटी बातों को दृष्टिगत कर देना चाहिए जो फूट डालने का कारण बनती हैं। (मलफ़ूज़ात प्रति 7 पृष्ठ – 119)

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

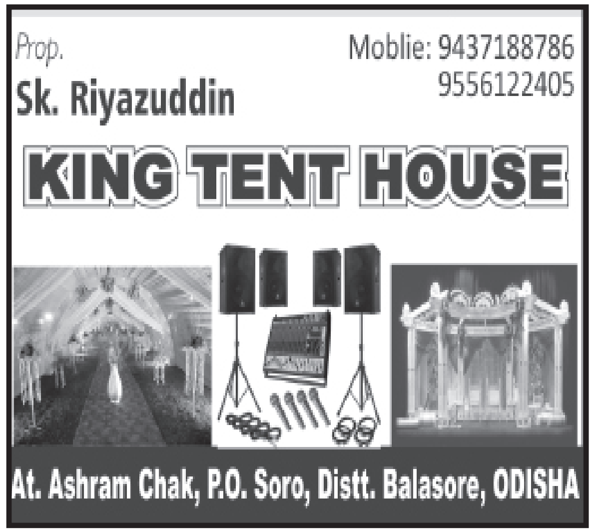
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque
FFT
Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO
JUICEPAK
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

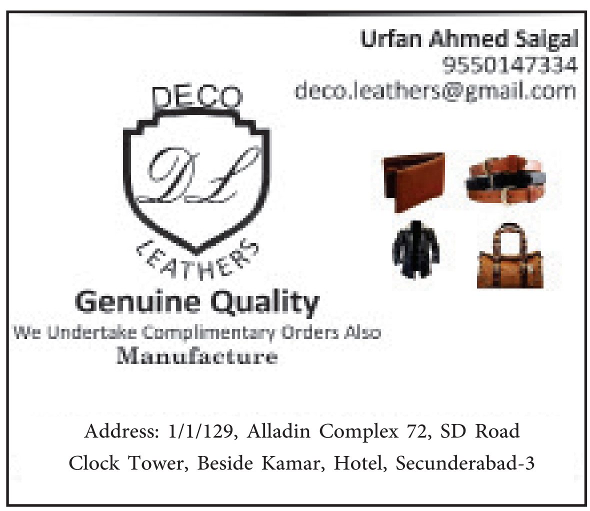
Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

भाषण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जो आप ने 1904 ई. के जलसा सालाना के अवसर पर 30 दिसम्बर को जुमा की नमाज़ के बाद मस्जिद अक़्सा (क़ादियान) में दिया।

(चूंकि विनीत सम्पादक (अलबदर) कुछ देर से पहुँचा था इसलिए जितना लिख सका वह प्रस्तुत है। भाषण से ज्ञात होता था कि दुनिया से अलगाव और ख़ुदा तआला के सानिध्य की तलाश के बारे में भाषण था और वह भाषण यह है)

इंसान को चाहिए कि नेकियों का पलड़ा भारी रखे परन्तु जहाँ तक देखा जाता है कि उस की तल्लीनता दुनिया में इतनी अधिक है कि यह पलड़ा भारी होता नज़र नहीं आता। रात-दिन इसी चिन्ता में है कि वह काम संसार का हो जाए, वह ज़मीन मिल जाए, वह मकान बन जाए हालाँकि उसे चाहिए कि सोच में भी धर्म का पलड़ा संसार के पलड़े से भारी रखे। यदि कोई व्यक्ति रात-दिन रोज़ा में लीन है तो यह भी उस के काम नहीं आ सकता जब तक कि ख़ुदा को उस ने प्राथमिकता नहीं दी। प्रत्येक कथन एवं कर्म में ख़ुदा की क़ुबूलियत के योग्य हरगिज़ न ठहरेगा। संसार का एक बुत होता है जो कि प्रत्येक समय इंसान की बग़ल में होता है। यदि मुक़ाबला और तुलना करके देखेगा तो उसे ज्ञात होगा कि भिन्न भिन्न प्रकार के दिखावे उस ने संसार के लिए बना रखे हैं और धर्म का पक्ष बहुत कमज़ोर है हालाँकि आयु का कोई भरोसा नहीं और न ज्ञात है कि उस ने इस पल के बाद जीवित भी रहना है कि नहीं शेख़ सअदी ने क्या ख़ूब कहा है

मकन तकिया बर उमर नापायदार

इस समय जितने लोग खड़े हैं कौन कह सकता है कि एक साल तक उन में से मैं ज़रूर जीवित रहूँगा, परन्तु यदि ख़ुदा तआला की तरफ़ से ज्ञात हो जाए कि अब जीवन समाप्त है तो अभी सब इरादे ख़त्म हो जाते हैं। अत: ख़ूब याद रखो कि मोमिन को दुनिया का बन्दा नहीं होना चाहिए। सदैव इस बात पर तत्पर रहना चाहिए कि कोई भलाई उस के हाथ से हो जाए। ख़ुदा तआला बड़ा रहीम करीम है और उसकी कदापि यह इच्छा नहीं कि तुम दु:ख पाओ। परन्तु यह ख़ूब याद रखो कि जो उस से जानबूझ कर दूरी धारण करता है उस पर उस का क़हर ज़रूर होता है। ख़ुदा की आदत इसी प्रकार से चली आती है। नूह (अलैहिस्सलाम) के ज़माने को देखो और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने को देखो कि उस समय जिन लोगों ने जानबूझ कर ख़ुदा तआला से दूरी धारण की उन की क्या दशा हुई। इन लम्बी इच्छाओं ने आदमी को तबाह कर दिया। अल्लाह तआला भी फ़र्माता है

أَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

अलहाकुमुत्तकासुर हत्ता ज़ुरतुमुल मक़ाबिर कि हे लोगों! यदि तुम ख़ुदा से अज्ञान हो, सांसारिक मोह ने तुम्हें अज्ञान कर दिया है यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में चले जाते हो परन्तु अज्ञानता से नहीं रुकते

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ

कल्ला सौफ़ा तअलमून परन्तु इस ग़लती का तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जाएगा

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ

सुम्मा कल्ला सौफ़ा तअलमून फिर तुम को सूचित किया जाता है कि शीघ्र तुम को ज्ञान हो जाएगा कि जिन इच्छाओं के पीछे तुम पड़े हुए हो वो कभी भी तुम्हारे काम न आएंगी और हसरत का कारण होंगी

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ

कल्ला लौ तअलमूना इलमल यक़ीन यदि तुम को पक्का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो तुम ज्ञान के द्वारा अपने जहन्नुम को देख लो और तुम को पता चल जाए कि तुम्हारी ज़िन्दगी जहन्नुमी ज़िन्दगी है और जिन विचारों में तुम रात-दिन लगे हुए हो वे बिल्कुल बेकार हैं। मैं प्रत्येक प्रकार से चेष्टा करता हूँ कि किसी प्रकार यह बातें लोगों के दिल में घर कर जाएं परन्तु अन्त में यही कहना पड़ता है कि अपने अधिकार में कुछ भी नहीं है जब तक ख़ुदा तआला स्वयं एक उपदेशक दिल में पैदा न करे तब तक लाभ नहीं होता। जब आदमी के सौभाग्य और पथ-प्रदर्शन के दिन आते हैं तो हृदय में एक उपदेशक स्वयं उत्पन्न हो जाता है और उस समय उस के दिल को ऐसे कान मिल जाते हैं कि वह दूसरों की बात को सुनता है। रातों और दिनों को ख़ूब सोच कर देखो तो तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि मानव बहुत ही आधारहीन चीज़ है और इस के सत्ता की कोई चीज़ भी इसके हाथ में नहीं है। एक आँख ही पर नज़र करो कि कितनी सूक्ष्म वस्तु है यदि एक थोड़ा सा पत्थर आ कर लगे तो शीघ्र ही अन्धा हो जाए। फिर यदि यह ख़ुदा का उपकार नहीं तो क्या है। क्या किसी ने ठेका ले रखा है कि ख़ुदा तआला ज़रूर उसे देखने वाला ही रखेगा और इसी पर सब क़ुव्वतों के बारे में सोचो कि यदि आज किसी में अन्तर आ जाए तो इन्सान की क्या चल सकती है। सार यह कि प्रत्येक क्षण और पल में उस की ओर लौटने की आवश्यकता है और मोमिन का गुज़ारा तो हो ही नहीं सकता जब तक उस का ध्यान प्रत्येक क्षण उस की ओर लगा न रहे। यदि कोई इन बातों पर ध्यान नहीं देता और एक धार्मिक दृष्टि से इनको प्राथमिकता नहीं देता तो वह अपने सांसारिक कामों पर ही नज़र डाल कर देखे कि क्या ख़ुदा तआला की सहायता और कृपा के बिना कोई काम उस का चल सकता है? और कोई लाभ संसार का वह प्राप्त कर सकता है? कदापि नहीं। धर्म हो या संसार प्रत्येक कार्य में उसे ख़ुदा तआला की सत्ता की बड़ी आवश्यकता है और प्रत्येक समय उस की ज़रूरत लगी हुई है। जो उस का विरोधी है अत्यधिक ग़लती पर है ख़ुदा तआला को तो इस बात की जब चिन्ता नहीं है कि तुम उस की ओर ध्यान रखो या न। वह फ़र्माता है:

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ

क़ुल मा यअबओ बेकुम रब्बी लौ ला दुआओकुम कि यदि तुम उस की ओर ध्यान रखोगे तो तुम्हारा ही उस में लाभ होगा। इंसान जितना अपने आप को लाभदायक प्रमाणित करेगा, उतने अधिक

उसके इनाम को प्राप्त करेगा। देखो कोई बैल किसी ज़मींदार को कितना ही प्यारा क्यों न हो परन्तु जब वह उस के किसी काम भी न आएगा, न गाड़ी में जुतेगा न खेती करेगा, न कुँए में लगेगा तो अन्त में ज़िबह के अतिरिक्त किसी काम न आएगा। एक न एक दिन मालिक उसे क़साई के सुपुर्द कर देगा। ऐसा ही जो आदमी ख़ुदा की राह में लाभदायक साबित न होगा तो ख़ुदा तआला उस की सुरक्षा का हरगिज़ ज़िम्मेदार न होगा। एक फल और साया देने वाले वृक्ष की तरह अपने आप को बनाना चाहिए ताकि मालिक भी हालचाल पूछता रहे परन्तु यदि उस वृक्ष के समान होगा कि जो न फल लाता है और न पत्ते रखता है कि लोग छाया में आकर बैठें तो सिवाय इस के कि काटा जाए और आग में डाला जाए और किस काम आ सकता है।

ख़ुदा तआला ने इन्सान को इसलिए पैदा किया है कि वह उस को पहचाने और सानिध्य प्राप्त करे

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

वमा ख़लक़तुल जिन्ना वलइन्सा इल्ला लिया बुदून जो इस उद्देश्य को सम्मुख नहीं रखता और रात-दिन संसार की प्राप्ति की चिन्ता में डूबा हुआ है कि वह ज़मीन खरीद लूँ वह मकान बना लूँ उस जायदाद पर कब्ज़ा कर लूँ तो ऐसे आदमी से सिवाए इस के कि अल्लाह तआला कुछ दिन छूट देकर वापस बुला ले और क्या व्यवहार किया जाए।

इंसान के दिल में ख़ुदा के सानिध्य की प्राप्ति का एक दर्द होना चाहिए जिस के कारण उस के सम्मुख वह महत्वपूर्ण चीज़ हो जाएगा। यदि यह दर्द उस के दिल में नहीं है और केवल संसार और सांसारिक चीज़ों का ही दर्द है तो अन्त में थोड़ी सी छूट पाकर वह तबाह हो जाएगा। ख़ुदा तआला छूट इसलिए देता है कि वह हलीम (सहनशील) है परन्तु जो उस की दया से स्वयं ही लाभ न उठाये तो उसे वह क्या करे। अत: इन्सान का सौभाग्य इसी में है कि वो उस के साथ कुछ न कुछ ज़रूर सम्बन्ध बनाए रखे। सब इबादतों का केन्द्र दिल है। यदि इबादत तो करता है परन्तु दिल ख़ुदा की ओर नहीं है तो इबादत क्या काम आएगी। इसलिए दिल का पूर्ण रूप से उस की ओर लगा होना ज़रूरी है। अब देखो कि हज़ारों मस्जिदें हैं परन्तु सिवाए इस के इस में रस्मी इबादत हो और क्या है? ऐसे ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय यहूदियों की अवस्था थी कि रस्म और आदत के रूप में इबादत करते थे और हृदय का वास्तविक झुकाव जो इबादत की आत्मा है हरगिज़ न था। इसलिए ख़ुदा तआला ने उन पर लअनत की। अत: इस समय भी जो लोग हृदय की पवित्रता की चिन्ता नहीं करते तो यदि रस्म अथवा आदत के रूप में वह सैकड़ों टक्करें मारते रहें, उन को कुछ लाभ न होगा। कर्मों के बाग़ की हरियाली हृदय की पवित्रता से होती है इसलिए अल्लाह तआला फ़र्माता है

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّاهَا وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا

क़द अफ़्लह मन ज़क्काहा वक़द ख़ाबा मन दस्साहा कि वही सफल होगा जो अपने हृदय को पवित्र करता है और जो उसे पवित्र न करेगा, अपितु धूल में मिला देगा अर्थात् गिरी हुई इच्छाओं का

उसे केन्द्र बना रखेगा वह असफल रहेगा। इस बात से हमें इन्कार नहीं है कि ख़ुदा तआला की तरफ़ आने के लिए हज़ारों रोके हैं यदि यह न होती तो आज समस्त संसार में न कोई हिन्दू होता न ईसाई। सब के सब मुसलमान नज़र आते परन्तु इन रोकों को दूर करना भी ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से होता है। वह क्षमता प्रदान करे तो आदमी अच्छे व बुरे में अन्तर कर सकता है। इसलिए अन्त में बात इसी पर आकर ठहरती है कि इन्सान उसी की ओर लौटे ताकि क़ुव्वत और ताक़त दे।

संसार में जितने परामर्श आत्मा और शरीर के भोग विलास इत्यादि के होते हैं उन सब का केन्द्र नफ़्से अम्मारह (तमो गुण) ही है परन्तु यदि इन्सान चेष्टा करे तो इसी अम्मारह से फिर लव्वाम: (रजोगुण) बन जाता है क्योंकि चेष्टा में एक बरकत होती है और इस से भी बहुत कुछ परिवर्तन हो जाते हैं। पहलवानों को देखो कि वह व्यायाम और मेहनत से शरीर को क्या कुछ बना लेते हैं तो क्या कारण है कि मेहनत और चेष्टा से नफ़्स का सुधार न हो सके। नफ़्से अम्मारह का उदाहरण आग का है जो कि भड़क कर तबीयत में एक जोश पैदा करती है जिस से आदमी संतुलन से गुज़र जाता है परन्तु जैसे पानी आग से गर्म हो कर आग सदृश तो हो जाता है और जो काम आग से लेते हैं वह उस से भी ले लेते हैं परन्तु जब उस पानी को आग के ऊपर गिराया जाए तो वह उस आग को बुझा देता है क्योंकि व्यक्तिगत गुण उस का आग को बुझाना है। वह वही रहेगा। ऐसे ही यदि आदमी की आत्मा नफ़्से अम्मारह से चाहे कितनी ही गर्म क्यों न हो परन्तु जब वह नफ़्स से मुक़ाबला करेगी और उस के ऊपर गिरेगी तो उसे पराजित करके छोड़ेगी । बात केवल इतनी है कि ख़ुदा तआला को प्रत्येक बात पर सर्वशक्तिमान जाना जाए और किसी प्रकार की कुधारणा उस पर न की जाए। जो कुधारणा करता है वही काफ़िर होता है। मोमिन के गुणों में से है कि वह अल्लाह तआला को सर्वशक्तिमान जाने। कुछ लोगों का विचार है कि बहुत नेकियाँ करने से आदमी वली बनता है। यह अज्ञानता है मोमिन को तो ख़ुदा तआला ने पहले ही वली बनाया है जैसे कि फ़र्माया

اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

अल्लाहो वलियुल्लज़ीना आमनू अल्लाह तआला की क़ुदरत के हज़ारों रहस्य हैं और उन्हीं पर खुलते हैं जो दिल के दरवाज़े खोल कर रखते हैं। अल्लाह तआला कंजूस नहीं है परन्तु यदि कोई व्यक्ति मकान का दरवाज़ा स्वयं ही नहीं खोलता तो फिर प्रकाश कैसे अन्दर आए। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की तरफ़ लौटेगा तो ख़ुदा तआला भी उसकी तरफ़ लौटेगा। हाँ यह आवश्यक है कि जहाँ तक बस चल सके वह अपनी ओर से भूल न करे। फिर जब उसकी चेष्टा उस के चरम बिन्दु तक पहुँचेगी तो वह ख़ुदा तआला के नूर को देख लेगा

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط

वल्लज़ीना जाहदू फ़ीना लनहदियन्नहुम सुबुलना में इस ओर इशारा है कि जो हक़ कोशिश का उस के ज़िम्मा है उसे पूरा करे। यह न करे कि यदि पानी 20 हाथ नीचे खोदने से निकलता है तो वह

केवल दो हाथ खोद कर हिम्मत हार दे। प्रत्येक कार्य में सफलता की यही जड़ है कि हिम्मत न हारे। फिर इस उम्मत के लिए तो अल्लाह तआला का वादा है कि यदि कोई पूरे तरीक़े से दुआ एवं पवित्रता से काम लेगा तो सब वादे क़ुरआन शरीफ़ के उस के साथ पूरे हो कर रहेंगे। हाँ जो विरुद्ध करेगा वह वंचित रहेगा। क्योंकि उसकी हस्ती ग़य्यूर है उस ने अपनी ओर आने की राह ज़रूर रखी है परन्तु उस के दरवाज़े तंग बनाए हैं। पहुँचता वही है जो कड़वाहटों का शर्बत पीले। लोग संसार की चिन्ता में दर्द बर्दाश्त करते हैं यहाँ तक कि कई इसी में मारे जाते हैं परन्तु ख़ुदा तआला के लिए एक काँटे का दर्द भी सहन करना पसन्द नहीं करते। जब तक उस की ओर से सच्चाई और धैर्य और वफ़ादारी के लक्षण प्रकट न हों उधर से रहमत के लक्षण कैसे प्रकट हों।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सच्चाई दिखाई तो उन को अबुलअंबिया (नबियों का पिता) बना दिया और कहने का अभिप्राय यह है कि दिन बहुत सख़्त हैं और किसी ने अब तक नहीं समझा तो भविष्य में समझ ले। मुझे इल्हाम हुआ था अफ़तिद्दयारों महिल्लोहा व मक़ामोहा यह एक ख़तरनाक वाक्य है जिस में ताऊन की ख़बर दी गई है कि आदमी के लिए कोई भागने और सुरक्षा का स्थान न रहेगा। इसलिए मैं तुम सब को गवाह रखता हूँ कि यदि कोई सच्चा परिवर्तन न करेगा तो वह हरगिज़ इस योग्य नहीं होगा कि मुझ को दुआ के लिए लिखे जो लोग ख़ुदा तआला के बताए हुए सीधे रास्ते पर चलेंगे वही सुरक्षित रहेंगे। ख़ुदा तआला का वादा ऐसे ही लोगों की सुरक्षा का है जो सच्चा परिवर्तन अपने अन्दर करते हैं। केवल बैअत आदमी के क्या काम आ सकती है। पूरा नुस्ख़ा जब तक न पीये तो रोगी को लाभ नहीं करता। इसलिए पूरा परिवर्तन करना चाहिए। जहाँ तक हो सके दुआ करो और अल्लाह तआला से कहो कि वह तुम्हें प्रत्येक प्रकार की क्षमता प्रदान करे।

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

सामान्य ज्ञान

बच्चों को ज्यादा स्क्रीन क्यों नहीं देखनी चाहिए?

यह बहुत हैरानी की बात है कि हाल के सालों में बहुत छोटे बच्चों के पास भी अपना पर्सनल मोबाइल या टैब हो गया है। जबकि, तमाम विशेषज्ञ बार-बार यह सलाह देते हैं कि बच्चों को मोबाइल या टैब देना उनके स्वास्थ्य के लिए सही नहीं है इसके बावजूद, इंटरनेट के इस युग में पेरेंट्स बच्चों के स्क्रीन टाइम को कम नहीं कर पा रहे हैं। आइये बच्चों के स्पेशलिस्ट डॉ. सईद मुजाहिद अंसारी से जानते हैं बच्चों को देर तक टीवी क्यों नहीं देखनी चाहिए और इससे होने वाले नुकसान।

डॉ. अंसारी के मुताबिक ज्यादा देर तक टीवी या फिर मोबाइल की स्क्रीन देखने से बच्चों की मेंटल और फिजिकल ग्रोथ पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। यही नहीं, बहुत छोटी उम्र से मोबाइल और टीवी में समय बिताने के कारण बच्चों की पर्सनैलिटी डेवेलपमेंट रुक गई है। ऐसे में बच्चों का सोशल सर्कल कम हो रहा है, जिससे वे नए दोस्त बनाने की बजाय स्क्रीन के सामने अधिक समय बिता रहे हैं।

बच्चों को स्क्रीन चलाने से क्या नुकसान होता है?

बच्चों को टीवी या फिर मोबाइल की स्क्रीन के सामने ज्यादा देर तक रहने से उनकी सोचने-समझने की क्षमता भी कम हो सकती है।

बहुत अधिक मोबाइल चलाने से उनके दिमाग की क्षमता कम हो जाती है।

इससे बच्चों की आंखों से देखने की क्षमता कम होने के साथ ही नींद आने में भी समस्या हो सकती है। इससे उन्हें थकान, कमज़ोरी और सुस्ती महसूस हो सकती है।

ज्यादा देर तक मोबाइल चलाने से बच्चों की मेमोरी पावर कम होती है, जिससे उनकी एकेडमिक ग्रोथ भी धीमी होती है।

बच्चों को स्क्रीन देखने की आदत कैसे छुड़वाएं?

बच्चों को स्क्रीन देखने की आदत छुड़वाने के लिए उन्हें मोबाइल और टीवी से दूर रखें।

इसके लिए आपको बच्चों के टीवी देखने के समय को नियमित करने की जरूरत है।

इसके लिए आपको बच्चों को साथ बैठकर समझाना चाहिए।

बच्चों को स्क्रीन देखने से होने वाले नुकसान के प्रति जागरुक करें।

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

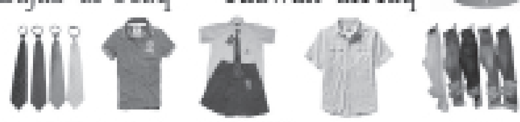

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in
Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

ज़रूरी ऐलान

130वां जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26,27,28 दिसंबर 2025 ई. (शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की मन्ज़ूरी दी है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको, ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से फायदा उठाने की तौफीक अता फरमाए। इस जलसे की कामियाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार नेक रूहों की हिदायत का ज़रिया बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆